इकाई -(2). सम्राट खारवेल का हाथी गुंफा शिलालेख:

Q.1 सम्राट खारवेल का हाथी गुंफा शिलालेख संक्षिप्त वर्णन करे।

Ans. मौर्यतर युगीन शिलालेख मे सम्राट खारवेल के हाथी गुफा का विशेष महत्व है। यह उडीसा जैन धर्म का प्रवेश शिशुनाग वंशीय राजा नन्दवर्धन के समय में ही हो गया था तथा खारवेल के पूर्व भी उदयगिरि पर्वत पर अर्हन्तो के मन्दिर थे। सम्राट सम्प्रति के समय में वहाँ चेदिवंश का राज्य था। इसी वंश में जैन सम्राट खारवेल हुआ, जो उस समय का चक्रवती राजा था। उसका एक शिलालेख उडीसा के भुवनेश्वर तीर्थ के पास उदयगिरी पर्वत की एक गुफा मे खुदा मिला है, जो हाथीगुफा के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे प्रतापी राजा खारवेल के जीवन वृतान्तो का वर्णन है।

इस शिलालेख से ज्ञात होता है कि खारवेल ने मगध पर दो बार चढाई की और वहाँ के राजा वहसति मित्र को पराजित किया। श्री काशीप्रसाद जायसवाल ने पुष्यमित्र और वहसति मित्र को एक अनुमान किया है

दक्षिण आन्ध्रवंशी राजा शातकर्णी खारवेल का समकालीन था। शिलालेख से ज्ञात होता है कि शातकर्णी की परवाह न कर खारवेल ने दक्षिण में एक भारी सेना भेजी, जिसने दक्षिण के कई राज्यों को पराजित किया। सुदूर दक्षिण के पाण्ड्य राजा के यहाँ से खारवेल के पास बहुमूल्य उपहार आते थे। उत्तर से लेकर दक्षिण तक समस्त भारत में उसकी विजय-पताका फहराई।

खारवेल एक वर्ष विजय के लिए प्रस्थित होता था, तो दूसरे वर्ष महल आदि बनवाता, दान देता तथा प्रजा के हित के कार्य करता था। उसने अपनी 35 लाख प्रजा पर अनुग्रह किया था, विजययात्रा के पश्चात राजसूय यज्ञ किया और ब्राह्मणों को बड़े-बड़े दान दिए उसने एक बड़ा जैन सम्मेलन बुलाया था, जिसमें भारत भर के जैन यतियों तपस्वियों, ऋषियों तथा पण्डितों को बुलाया था। जैन संघ ने खारवेल को खेम राजा, भिक्षुराजा और धर्मराजा की पदवी प्रदान की। यह शिलालेख ई०पू० 15-100 के लगभग का है। ऐतिहासिकों का मत है कि मौर्यकाल की वंशपरम्परा तथा काल गणना की दृष्टि से इसका महत्व अशोक

शिलालेखों से भी अधिक है। देश में उपलब्ध शिलालेखों में यही एक ऐसा लेख है, जिसमें वंश तथा वर्ष संख्या का स्पष्ट उल्लेख हुआ है।

प्राचीनता की दृष्टि से यह अशोक के बाद का शिलालेख माना जाता है। इसमें तत्कालीन सामाजिक अवस्था और राज्य व्यवस्था का सुन्दर चित्रण है। 17 पंक्तियों के इस शिलालेख को ज्यों-के त्यों रूप में उद्धृत किया जाता है। भारत वर्ष का सर्वप्रथम उल्लेख इसी शिलालेख की दशवीं पंक्ति में भरधवस के रूप में मिलता है। इस देश का भारतवर्ष नाम है, इसका पाषाणोत्कीर्ण प्रमाण यही शिलालेख है।

अतः कहा जा सकता है कि सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक एवं साहित्यिक दृष्टि से हाथी गुफा शिलालेख का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।